पूज्य लालचंदभाई का प्रवचन
श्री नियमसार गाथा ७७-८१
दीवानपरा, राजकोट
तारीख १५-१०-१९८८, प्रवचन ४२४

अब उपचार से कर्तापने का निषेध करने के लिए, उस वीतराग परिणाम का ज्ञाता हूँ (ऐसा कहा)। उसमें ज्ञाताबुद्धि तो प्रथम छूट गई है। ज्ञाताबुद्धि प्रथम छूट गई है इसलिए ज्ञाता का व्यवहार आ जाता है। फिर अच्छे से लिखना हो तो तुम लिख लेना, लेकिन पहले (सुन लेना)।

मुमुक्षु: हाँ, ज्ञाताबुद्धि छूट गई प्रथम, बाद में....

पू. लालचंदभाई: ज्ञाता का व्यवहार सविकल्प (दशा) में आता है, सविकल्प (दशा) में आता है। ये ध्यान रखना! और आखिर में, फिर से निर्विकल्पध्यान में जाने के लिए, वीतरागी परिणति का ज्ञाता भी छूट जाता है, ज्ञाता का व्यवहार छूटकर निश्चय आ जाता है। वो १८वें बोल में आया है न, परिणाम का कर्ता नहीं है और परिणाम का ज्ञाता भी नहीं है। कर्ताबुद्धि छूट गई तो कर्ता का व्यवहार आया, ज्ञाताबुद्धि छूट गई तो ज्ञाता का व्यवहार आया। बस! ये दो Main (मुख्य) हैं। कर्ताबुद्धि छूटी तो कर्ता का व्यवहार (आया), ज्ञाताबुद्धि छूट गई तो ज्ञाता का व्यवहार आया। दो लाइन Main (मुख्य) हैं। उसका सब विस्तार है बाद में।

बाद में व्यवहार आया तो क्या करना अब? कर्ता का व्यवहार भी आया- उपचार (से कर्ता) वीतरागभाव का; और वीतरागभाव का ज्ञाता, बारहवीं गाथा में है न, व्यवहार जाना हुआ प्रयोजनवान? (तो) अब क्या करना? उसको भी छोड़ देना, (उसका) निषेध करना। आहाहा! व्यवहार समस्त ही अभूतार्थ है, बहन। अपूर्व चीज़ है (ये)! ये कुंदकुंद भगवान की देन है, किसी (और) की ताकत नहीं है। कर्ताबुद्धि छूटी तो कर्ता का व्यवहार (आया)। कर्ताबुद्धि राग के अंदर थी न, वीतरागभाव तो था नहीं। अज्ञानी के पास तो राग है, राग का मैं कर्ता और राग मेरा कर्म - ऐसी एकत्वबुद्धि थी, कर्ताबुद्धि थी। तो कर्ताबुद्धि छूटी तो वीतरागभाव प्रगट हुआ (तो उसके ऊपर) कर्ता का उपचार आया। और वो राग का ज्ञाता ऐसी बुद्धि छूट गई, तो वीतरागभाव का ज्ञाता - ऐसा व्यवहार आया। दो व्यवहार खड़े (हुए)। अज्ञान जाने के बाद दो व्यवहार आए - कर्ता का और ज्ञाता का।

मुमुक्षु: अज्ञान जाने के बाद व्यवहार आता है।

पू. लालचंदभाई: हाँ! अज्ञान जाने के बाद ही व्यवहार आता है। 'ही' लिखना, 'ही'। और बाद में उन दोनों व्यवहार (को) छोड़कर अंदर में फिर घुस जाता है।

मुमुक्षु: पंचरत्न की गाथा में, पंचरत्न की गाथा में ये दो बात आयी थी।

पू. लालचंदभाई: दोनों का निषेध किया। कर्तापने के उपचार का निषेध किया और ज्ञातापने के उपचार का भी निषेध करके अंदर में चले गए, क्योंकि परमार्थ प्रतिक्रमण यानि शुद्धोपयोगदशा। मुनि का छठवाँ-सातवाँ गुणस्थान (उस)में से सातवें में चले जाते हैं। छठवें में क्या आता था? (जानते हो?)

कर्ता का उपचार और ज्ञाता का उपचार - दो उपचार आते थे। दोनों एक समय में साथ में थे। परिणमता है, इसलिए कर्ता का उपचार और उसको सविकल्पदशा में जाना हुआ प्रयोजनवान (है), तो ज्ञाता का उपचार आता है। वो खटका! आहाहा!

मुमुक्षु: खटका, खटका तो निकल गया।

पू. लालचंदभाई: नहीं, मैं उपचार से कर्ता नहीं और उपचार से उसका ज्ञाता (भी) नहीं हूँ, अनुपचार में आ जाता है। उपचार छोड़कर अनुपचार में (आ जाता है)। वो बात अपनी अच्छी आई थी। जंगल में, जंगल की बात अच्छी आई थी। उसका ही ये सब विस्तार (चलता है)। अभी तक विस्तार चल रहा है। चलेगा, चलने दो। आप गए उसके बाद यह विचार आया कि 'उपचार से कर्ता है, ऐसा क्यों आया?' उपचार से ज्ञाता। बाद में 'उपचार से ज्ञाता, वह किसलिए (आया)?' इस प्रकार (विचार चला)।

तत्त्व बहुत गहराईवाला सूक्ष्म है। कोई जीव ही (वहाँ तक) पहुँच सके। आहाहा! ज्ञाता का निषेध करना अर्थात् क्या? ज्ञाताबुद्धि छूटना मुश्किल। मुश्किल से छूटी ज्ञाताबुद्धि तो ज्ञाता का व्यवहार आया। आहाहा! सविकल्पदशा में कर्ता का व्यवहार और ज्ञाता का व्यवहार आता है। वीतरागभाव का कर्ता और वीतरागभाव का ज्ञाता। बस! बाद में, आहाहा! ज्ञायक का ज्ञाता। देखो! उपचार से कर्ता था न - उसका (निषेध) 'मैं अकर्ता हूँ' तो कर्ता का व्यवहार टल जाता है। और उपचार से मैं परिणाम का ज्ञाता हूँ, उसका निषेध किया तो ज्ञायक का ज्ञाता हो गया।

मुमुक्षु: पूरे ज्ञायक का ज्ञाता।

पू. लालचंदभाई: पूरे ज्ञायक का ज्ञाता हो गया। पहले कर्ताबुद्धि छोड़ने के लिए अकर्ता का सहारा लिया। कर्ता का उपचार आता था न! उसके लिए (नियमसार गाथा ७७-८१) परमार्थ प्रतिक्रमण में क्या कहा, मालूम है?

मुमुक्षु: मैं कर्ता नहीं हूँ।

पू. लालचंदभाई: हाँ! अकर्ता का सहारा ले लिया। और 'उसका ज्ञाता हूँ', उसका निषेध करने के लिए 'अरे! ज्ञायक का ज्ञाता हूँ'।

मुमुक्षु: चैतन्य के विलासस्वरूप आत्मा को भाता हूँ, दो बातें हैं।

पू. लालचंदभाई: (चैतन्य के विलासस्वरूप) आत्मा को भाता हूँ, वो। दो बातें उसमें हैं, दोनों बातें हैं। एक अव्यक्त है। ज्ञाता-ज्ञेय का व्यवहार, वह अव्यक्तपने उसमें आ जाता है। आहाहा! बहुत गाथा ऊँची है। चैतन्य के विलासस्वरूप आत्मा को भाता हूँ। मुझे तो मेरा भगवान जानने में आता है। आहाहा!

मुमुक्षु: जाननहार जानने में आता है।

पू. लालचंदभाई: जाननहार जानने में आता है। आया? जाननहार जानने में आता है। जाननहार हूँ अर्थात् उपचार से कर्ता नहीं हूँ; और जाननहार जानने में आता है अर्थात् परिणाम का भी (मैं) ज्ञाता नहीं हूँ। आहाहा! फिर से निर्विकल्पध्यान-अप्रमत्तदशा आती है। आहाहा!

मुमुक्षु: अकर्ता में कर्ता का उपचार जाता है।

पू. लालचंदभाई: जाता है।

मुमुक्षु: और जाननहार जानने में आता है, उसमें ज्ञाता का उपचार जाता है।

पू. लालचंदभाई: उपचार जाता है, बस। रवीन्द्र भैया! हमारे बीच में कुदरती बहुत सूक्ष्म बात चलती है, कुदरती। कुदरती बहुत चर्चा, इतनी सूक्ष्म चलती है। ओहोहो! कभी-कभी मन भर जाता है। आहाहा! ऐसा स्वरूप है।

मुमुक्षु: कर्ता के उपचार (का निषेध) में द्रव्य का निश्चय आ गया।

पू. लालचंदभाई: हाँ! कर्ता का उपचार था इसलिए अकर्ता में आया तो द्रव्य के निश्चय में आया। और उसका (ज्ञायक का) मैं जाननेवाला हूँ, तो पर्याय के निश्चय में आ गया। चैतन्य के विलासस्वरूप आत्मा को जानता हूँ, मैं परिणाम को जानता नहीं। वीतरागी भाव को, परिणाम को जानता नहीं, निश्चय मोक्षमार्ग के परिणाम को जाननेवाला (मैं) नहीं। और करनेवाला उपचार से और जाननेवाला भी उपचार से, निश्चय रत्नत्रय के परिणाम, हों! मोक्ष का मार्ग। आहाहा! वहाँ से खिसक जाता है आत्मा, हट जाता है, अंदर में घुस जाता है। परिणाम का लक्ष छूट जाता है। आहाहा! हमें तो यही अच्छा लगता है अब बस, बाकी कुछ नहीं है। दुनिया दुनिया का जाने, बस।

मुमुक्षु: कर्ताबुद्धि (के नाश) के लिये भी अकर्ता में आना पड़ता है और कर्ता के उपचार के निषेध के लिए भी अकर्ता में ही आना पड़ता है।

पू. लालचंदभाई: बराबर है! क्योंकि अकर्ता के जोर से कर्ता का उपचार छूट जाता है न।

मुमुक्षु: अकर्ता के जोर में कर्ताबुद्धि छूटती है और अकर्ता के जोर में ही श्रेणी आती है।

पू. लालचंदभाई: हाँ!

मुमुक्षु: दोनों काम अकर्ता में ही होते हैं।

पू. लालचंदभाई: अकर्ता ऐसा ज्ञायक है न, ऐसा ज्ञायक है। वो आत्मा है। अकर्ता ऐसा जो ज्ञायक वो आत्मा है। अकर्ता किसलिए विशेषण है? न्याय में आया है कि कर्ताबुद्धि तो छूटे (ही) परंतु कर्ता का उपचार भी छूटे। इसलिए 'अकर्ता ऐसा ज्ञायक' दो शब्द हैं हमारे न्याय में। हेतु है उसमें।

मुमुक्षु: ओहो! उपचार के निषेध के लिए भी अकर्ता है।

पू. लालचंदभाई: अकर्ता ज्ञायक! और उसकी पर्याय को जानना बंद करने के लिए ज्ञायक।

क्या कहा? उपचार से कर्ता आता था शुद्ध पर्याय का, निर्मल पर्याय का - इसके लिए 'अकर्ता' विशेषण दिया। समझे? और 'ज्ञायक' शब्द कैसा है कि पर्याय का ज्ञाता हूँ, वो छूटता है, ज्ञायक का ज्ञाता हूँ। अकर्ता ऐसा ज्ञायक।

मुमुक्षु: अकर्ता का लक्ष करे तो कर्ता का उपचार जाता है;

पू. लालचंदभाई: हाँ।

मुमुक्षु: और 'ज्ञायक जानने में आता है' इसमें - पर्याय की ज्ञाताबुद्धि का उपचार आता था, वो निकल गया।

पू. लालचंदभाई: उपचार आता था, वो निकल गया।

अब तो जहाँ पहुँचना है न, वहाँ तक का अभी निर्णय कर लेना। जहाँ पहुँचना है न, उसका

निर्णय अभी - इस पर्याय में कर लेना। अभी तो अपने को तो दूर जाना है न, इधर नहीं टिकना है।

मुमुक्षु: बहुत अच्छी बात है! अकर्ता (हूँ) और जाननहार जानने में आता है।

पू. लालचंदभाई: आज थोड़ी बातें, आप गए न, बाज़ार में, तब मीठाभाई, मैं और बहन (तीनों) थे। इसमें यह उपचार की कितनी बातें निकलीं। बाद में वो गए उसके बाद में ये विचार फिर से आए। ये तो विचार चलते ही रहते हैं।

सर्वांगी समाधान आज हो गया सब और (वो भी) शास्त्र के आधार से (हुआ)। 'अकर्ता ऐसा ज्ञायक', विशेषण किसलिए 'अकर्ता' का लिया? कि कर्ताबुद्धि छूटे और कर्ता का उपचार छूटे, इसलिए 'अकर्ता' विशेषण। 'ज्ञायक' विशेषण इसलिए लिखा कि परिणाम का ज्ञाता हूँ - ऐसी बुद्धि छूटे और परिणाम का ज्ञाता हूँ - ये व्यवहार भी (छूटे)। आहाहा! एक ज्ञायक में ताकत है इतनी।

मुमुक्षु: 'अकर्ता' कर्ता का उपचार छुड़ाता है और 'ज्ञायक है' वो ज्ञाता का उपचार छुड़ाता है।

पू. लालचंदभाई: छुड़ाता है, बस। आहाहा! उपचार भी दोष है, गुण नहीं है। बहन! दोष है। सविकल्पदशा है।

मुमुक्षु: गुणस्थान रहित है।

पू. लालचंदभाई: बस! अपना विषय पूरा हो गया। कुछ न कुछ नया निकलता है। चलो! अब अपना स्वाध्याय, पिताजी के लिए करना।